।। ने:करमी को अंग ।।

मारवाडी + हिन्दी

*

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ ने:करमी को अंग लिखंते ||

|| कवत ||

बळवंत गयो जो न्हास || ताही भागो मत जाणो ||
धनवंत मांगण जाय || ताय मत भिक्षक पिछाणो ||
जड़ी सजीवन पास || मरण को भै नही आवे ||
पंछी चले पयाद || पकड़ क्हो कुण ले आवे ||
सुखराम आड़ जळ मे तिरे || यु नर पर भिदे न कोय ||
ग्यान जोग ज्हाँ ऊदत हे || क्रम ग्रेण नही होय || १ ||

लडाई मे किसी के सामने से कोई बलवान मनुष्य भाग गया तो उसे भागने वाला मत जानो । और कोई धनवान मनुष्य किसी से कुछ माँगने के लिए गया तो,उसे भिक्षुक मत जानो और जिसके पास संजीवनी बूटी है उसे मरने का डर नही है । ऐसे ही पक्षी पैरो से चल रहा होगा तो भी उसे पकडकर कोई ला नही सकता है । आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है कि आड नामक एक पक्षी है वह पानी मे तैरता है परन्तु उसके पंखो को पानी की बूंद भी लगती नही है पानी मे रहकर भी सूखा रहता है ऐसे ही जो ने:कर्मी मनुष्य है की जिसे कैवल्य ज्ञान योग उदीत हुआ है,उस मनुष्य को कर्म नही लग सकते है || १ ||

कुंडल्यो ||

सम दृष्टी जे संत जन || करत कुटम प्रतपाळ ||
बायर रूच भीजे नही || धाय चुँगावत बाळ ||
धाय चुँगावत बाळ || पाहण चकमक जळ माही ||
काष्ट आग प्रकास || आड पर भीजत नाही ||
सुखराम कनक बिग्यान के || क्रम न झुंबे काळ ||
सम दृष्टी जो संत जन || करत कुटम प्रतपाळ || २ ||

जो समदृष्टी संतजन है,वे अपने परीवार कुटुम्ब का प्रतिपाल करते है । वह कैसे पूछोगे,तो छोटे बच्चे को स्तन पिलाने के लिए धाय(दाई)रखते है । वह उपर से बच्चे के उपर बहुत रूची रखती है । और लाड,प्रेम करती है परन्तु अपने मन मे समझती है । कि यह बच्चा मेरा नही है । यह बच्चा दूसरे का है । ऐसे ही ये समदृष्टी रखने वाले संतजन है वे संसार मे रहते है । परीवार कुटुम्ब का प्रतिपाल करते है परंतु परीवार कुटुम्ब मे भीनते नही है । वे अपने परीवार कुटुम्ब को अपना है,ऐसा नही समझते है । जैसे छोटे बच्चे को स्तन पिलाने के लिए रखी हुयी दाई के जैसे । जैसे दाई बच्चे को अपना नही जानती है । वैसे ही ये संतजन कुटुम्ब परीवार को अपना नही जानते है ।) ये समदृष्टी संतजन कैसे रहते है । तो जैसे पत्थर और चकमक पानी मे रहता है । पत्थर और चकमक मे पानी कभी भी भीनता नही है । कितने ही वर्षो तक पत्थर पानी मे रहा और

उसे बाहर निकालकर उसके उपर चकमक मारा तो उसमे से चिंगारी निकलती है । पानी मे रहने से उसके अन्दर की आग बुझी नही उसी तरह से संतजन संसार मे रहते है । लकडी मे आग रहती ऐसे ही ये संतजन संसार मे रहते है । परन्तु लकडी के अन्दर की आग की तरह,वे बाहर दिखाई नही देते है । जैसे आड पक्षी पानी मे डूबकी लगाकर सुखा बाहर निकलता है वैसे ही विज्ञानी संत संसार मे रहे,तो भी उन्हे कर्म नही लगते और कर्म नही लगने से उन्हे काल भी झोंबता नही । जिस धातु मे जंग लगता है उसका नाश होता है परन्तु सोने को जंग नही लगता है । उसका जंग से नाश नही होता है । वैसे ही जिस मनुष्य को कर्म लगते है । तो उस कर्म से ही उसका नाश हो जाता है परन्तु विज्ञानी संत को कर्म न लगने के कारण उसे काल भी नही लग सकता है । वे संत समदृष्टि संतजन संसार मे रहकर,परीवार कुटुम्ब का प्रतिपाल करते हुए,अलग ही रहते है । ।। २ ।।

कवत ।।

प्रगट पुतळी प्राण ।। पिंजर बाजीगर बोले ।।
भ्रमाये भगवंत ।। भ्रम टाटी के ओले ।।
रचना भ्रमत रूसी मिश्र ।। काजी क्हो क्या करे ।।
पिंपळ बांधी पछे ।। जंगळी जन तो न्यारे ।।
बिण बखाणे बाजती ।। बंदर ज्यूँ बादी बसु ।।
सुखराम राम रचना ईसी ।। क्या जाणे बपड़ा पसू ।। ३ ।।

कठपुतली के खेल मे,कठपुतली प्रगट नाचते हुए दिखाई देती है परन्तु उसे नचानेवाला और बुलवाने वाला बाजीगर अलग है इसप्रकार कठपुतली पराधीन है । ऐसे ही संतजन स्वयं को पराधीन समझते है । इसतरह भगवान ने सभी को भ्रम मे डाल दिया । उसकी रचना मे सभी ऋषी,मिश्र(जिस देश मे पहले मुसलमान लोग रहते थे,उस देश के लोग)और काजी(मुसलमानो को ज्ञान बताने वाला),ये सब उसकी रचना मे भ्रमित होकर कुछ का कुछ करने लगे । जैसे एक मदारी पिपल की जड मे रस्सी को बांधकर,उसके उपर बैठ गया और खेल देखने वाले सभी लोगो से बोला कि अब मुझे खीचो । सभी लोग उस रस्सी को खिचने लगे परन्तु वह रस्सी पीपल की जड मे बांधी रहने के कारण वह मदारी लोगो से खीचा नही गया तब सभी लोग अचम्भे मे पड गये,कि यह मदारी इतने लोगो से खिचा नही गया,यह कितना बडा चमत्कार है । उसी समय एक जंगली मनुष्य जंगल से घास का गटठर सिरपर लिए हुए आया । उसकी घास के गठ्ठे मे एक ऐसी बूटी थी कि उससे जो कुछ भी गुप्त होगा दिखाई देने लगेगा । ऐसा उस बूटी मे गुण था । जिससे उस जंगली मनुष्य को वह फंदा पीपल की जड मे बांधा गया है यह दिखाई देने लगा । अरे,यह रस्सी क्यो खिचते हो,यह रस्सी पीपल की जड मे बाँधी हुयी है यह तुमसे

नही खीची जायेगी । (इस जंगली मनुष्य की तरह से संत जनो को गुप्त जो होगा दिखाई देता है । वे संत सबसे बताते भी है परन्तु उनकी बात कोई भी नही सुनता है जैसे जंगली मनुष्य ने रस्सी पीपल की जड मे बांधी है ऐसा बताया परन्तु लोगो ने कुछ सुना नही । जैसे कही वीणा बज रही हो,तो सब लोग उसकी बखान करते है । परन्तु यह नही समझते है कि इस वीणा को बजाने वाला कोई दूसरा ही है । उस वीणा की बखान करते है । वैसे ही ये संतजन वीणा की तरह स्वयं को परतंत्र समझते है । जैसे बन्दर मदारी के वश मे है । वैसे ही ये संतजन स्वयं को भगवंत के वश समझते है । आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि रामजी की रचना ऐसी है कि उस रचना को संतजनो के अलावा ये बापडे याने पशु के जैसे जीव,क्या जानेगे । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।। ३ ।।

पारब्रम्ह बादस्हा ।। संत स्हाजादा सच्चा ।।
प्रजा डंडे खुस्याल ।। काळ केसर का बच्चा ।।
माया बड़ी भुजंग ।। विषे मुख की लत चेरा ।।
नाग निवण मुख नाँव ।। गारडु गरू सनेरा ।।
जन जंबूरा ना बदे ।। कहो रचना किसकी रची ।।
सुखराम दास गेवर गिड़े ।। जळ आधार जीवे मछी ।। ४ ।।

पारब्रम्ह बादशाह है और संतजन उनके शाहजादे है (बादशाह के पुत्र है ।)(तो बादशाह के पुत्र ने कुछ बुरा किया या कोई अन्याय किया या बुरे रास्ते पर चला,तो उस बादशाह के बेटे का कोई पोलिस या प्रजा के लोग कुछ नही कर सकते है । वैसे ही इस पारब्रम्ह के संत को कोई(यमराज वगैरे)कुछ नही कर सकते है ।) बादशाह के पुत्र ने प्रजा को न्याय से या अन्याय से दण्ड दिया तो भी उसका कोई कुछ भी नही कर सकता है । जैसे सिंह के बच्चे ने किसी भी निरपराधी प्राणी को मार दिया तो भी दूसरे प्राणी उसका कुछ नही कर सकते है और सिंह भी मना नही कर करता है । जैसे काल ने किसी को मार दिया,तो उसका कोई क्या कर सकता है ऐसे ही संतो की बात जानो । माया बहुत बडी भुजंग याने सर्पीणी है और इस नागीन रूपी माया का सभी को डर है परन्तु मदारी का लडका सर्पीणी से नही डरता है । वैसे ही पारब्रम्ह बादशाह के पुत्र संत शाहजादे इस इस माया से डरते नही है । वे सर्पीणी के मुख को किल देते है(दाढ बंद करते है)ऐसे ही ये संत जन माया से नही डरते है । जैसे मदारी का बेटा नागीन से नही डरता है इसी प्रकार से संत को माया का डर नही है । नागनिवण नामक एक जडी है । उससे सर्प कैसा भी रहा तो भी गरीब हो जाता है । वैसे ही संतो के मुँख मे रहनेवाले नाम के प्रताप से माया उस संत का कुछ भी नही कर सकती है । तो मदारी जिस बच्चे का बाप है वह बच्चा नागीन से डरता नही है वैसे ही जिस संत को समर्थ सतगुरू मिल गये है उस पारब्रम्ह के

संतो का माया कुछ भी नही कर सकती है । उस मदारी के खेल मे मदारी का जंबूरा(पुत्र)भूलता नही है और मदारी के खेल को मानता भी नही है,क्यो कि उसे सब कुछ मालुम है वैसे ही ये संत पारब्रम्ह की रचना मे भूलते नही है । लोग मदारी के खेल मे भूलकर उसे सच कहेंगे परन्तु जमूरा सच नही कहेगा वैसे ही पारब्रम्ह की माया को लोग सच्ची कहेगे परन्तु संत सच्चा नही कहेंगे क्यो कि ये दोनो ही (जबूरा और संत)जानते है कि यह खेल माया किसने रची है । जो उसमे रहते है वे उसकी सभी कला जानते है । जैसे पानी मे रहने वाली मछली धार के सामने चली जाती है परन्तु बडा हाथी पानी मे फिसलकर बह जाता है । वह मछली पानी के आधार से ही जीवीत रहती है ऐसे ही परब्रम्ह सतस्वरुप के आधार से संत रहते है ऐसा समझना चाहिए । ।। ४ ।।

।। इति नेःकरमी को अंग संपूरण ।।